मुक्तिबोध

छायावादोत्तर हिन्दी काव्य

डॉ० अनिरुद्ध सिंह
झाखाड़ी महाविद्यालय

मुक्तिबोध का जन्म 13 नवम्बर 1917 को शिवपुरी जिला मुरैना, ग्वालियर म०प्र० में हुआ था।

पिता का नाम - माधवराव
माता का नाम - पार्वती बाई

लेखन - आपने कहानी, कविता, निबंध, आलोचना, इतिहास विधाओं में साहित्य सृजन किया.

कविता संग्रह - चाँद का मुँह टेढा है,
भूरी भूरी खाक धूल
तार सप्तक में रचनायें प्रकाशित

कहानी संग्रह - काठ का सपना

उपन्यास - विपात्र
सतह से उठता आदमी

आलोचना - कामायनी : एक पुनर्विचार
नई कविता का आत्मसंघर्ष
नए साहित्य का सौंदर्यशास्त्र
समीक्षा की समस्याएं

आत्मकथा - एक साहित्यिक की डायरी

इतिहास - भारत : इतिहास और संस्कृति

Scanned with CamScanner

मुक्तिबोध प्रगतिशील कविता के प्रमुख कवियों में से एक हैं। अन्य प्रगतिशील कवियों से आधारभूत वैचारिक समानता के बावजूद मुक्तिबोध का काव्य भिन्न और अपनी वैयक्तिक विशिष्टता लिए हुए है। जीवन, साहित्य और कला संबंधी प्रश्न पर मुक्तिबोध ने स्वतंत्र रूप से चिंतन-मनन कर जो विचार अभिव्यक्त किए हैं और जो काव्य रचना की है उसे समझने के लिए मुक्तिबोध की जीवन प्रक्रिया और रचना प्रक्रिया को जानना बहुत जरूरी है।

मुक्तिबोध कवि कर्म को शुद्ध कवि कर्म नहीं मानते बल्कि उसे गहरे सामाजिक सरोकारों से जोड़ कर देखते हैं। यह भी एक कारण रहा है कि गहरे सामाजिक सरोकारों की काव्य अभिव्यक्ति को सफल बनाने के लिए ~~जिस काव्य~~ जिस काव्य-पद्धति को उन्होंने चुना, निर्माण किया - उनकी दुरूहता को लेकर उनकी जीवन-दृष्टि और काव्य-दृष्टि के बारे में काफी विवादास्पद स्थिति पैदा ~~की~~ होती रही है। उन्हें विश्लेषित करने के ~~लिए~~ क्रम में उन्हें मार्क्सवादी, अस्तित्ववादी, रहस्यवादी, भाववादी, यथार्थवादी, आदि परस्पर विरोधी मान्यताओं से युक्त अंतर्विरोधों ~~से~~ का कवि भी सिद्ध किया गया। लेकिन बाद में यह निर्विवाद रूप से साबित हो गया कि मुक्तिबोध एक प्रतिबद्ध और अपने समय से जूझते जागरूक कवि हैं।

Scanned with CamScanner

सामान्य परिवार के साथ एक सर्वमान्य, अभाव ग्रस्त जिंदगी बसर करते हुये मुक्तिबोध ने अपने जीवन-दर्शन का निर्माण किया था। मुक्तिबोध के ऊपर मार्क्सवाद का गहरा प्रभाव था, उनके जीवन दर्शन को लेकर स्पष्ट मान्यता रही है कि 'किसी न-किसी रूप में हमारे पास व्यापक जीवन दर्शन आवश्यक है। इसमें अगर कुछ भी न हो तब भी वे बुनियादी बातें तो हों, जिन्हें साधारण जन अपने हृदय में अनुभव करते हैं जैसे- अन्याय का प्रतिकार, मानव सभ्यता की स्थापना के प्रयत्न, विकृत स्वार्थवाद और भ्रष्टाचार का विरोध, । क्या जीवन दर्शन के लिये हमें पश्चिमी सभ्यताओं की पच्चीकारी तक जाना होगा।'

मुक्तिबोध ने जीवन और कविता का अत्यंत विशुद्ध और विस्तृत खुलासा उन्होंने अपनी 'चकमक की चिनगारी' शीर्षक कविता में इस प्रकार प्रस्तुत किया है -

कि मैं अपनी अधूरी दीर्घ कविता में
सभी प्रश्नोत्तरी की तुंग प्रतिमाएं
गिराकर तोड़ देता हूँ हथौड़े से
कि वे सब प्रश्न कृत्रिम और
उत्तर और भी हृदमय
समस्या एक
मेरे सभ्य नगरों और ग्रामों में
सभी मानव सुखी सुंदर न शोषण मुक्त कब होंगे?

प्रगतिशील साहित्यान्दोलन के आरंभ से लेकर साहित्य में कलाकार की पक्षधरता का प्रश्न अब तक एक ज्वलंत प्रश्न बना हुआ है। अपने कला चिंतन के साथ ही उन्होंने कविताओं में भी अपनी पक्षधरता को घोषित किया है -

Scanned with CamScanner

"धरती के विकासी द्वन्द्व-क्रम में एक छटपटाता वक्ष
स्नेहाश्लेष या संगर कहीं भी हो
कि धरती के विकासी द्वन्द्व-क्रम में एक मेरा पक्ष
मेरा पक्ष, निःसंदेह।"

अपने संपूर्ण मनन-चिंतन और आग्रह-अनुरोधों की दृष्टि से मुक्तिबोध एक प्रतिबद्ध और पक्षधर कलाकार चिंतक के रूप में हमारे सामने आते हैं। उनकी वास्तविक प्रतिबद्धता शोषित, उत्पीड़ित विश्व जनता के उद्धार के महान लक्ष्य से जुड़कर एक अत्यंत व्यापक आधार ग्रहण करती है। इस संबंध में उनका स्पष्ट आग्रह रहा है -

'मेरे मित्र
कुहासे गत युगों के अपरिभाषित
सिंधु में डूबी
परस्पर जो कि मानव पुण्य धारा है।'

मुक्तिबोध ने निश्चित दृष्टि और दिशा को मार्क्सवादी चिंतन मात्र से न प्राप्त कर अपने जीवनानुभवों से भी पुष्ट किया था। आत्म-शोध और आत्मलोचन की प्रवृत्ति मुक्तिबोध में अन्य कवियों की अपेक्षा अधिक दिखाई देती है। इस संबंध में 'चकमक की चिनगारियाँ' कविता का दूसरा उदाहरण है -

"कि मैं अपनी अधूरी दीर्घ कविता में
उमग कर जन्म लेना चाहता फिर से
कि व्यक्तित्वांतरित होकर
नये सिरे से समझना और जीना
चाहता हूँ सच।"

Scanned with CamScanner

मुक्तिबोध ने कला के प्रश्नों को जीवन के प्रश्नों के साथ जोड़ने का सफल प्रयास किया है। अन्य प्रगतिशील कवियों ने भी कविता को जीवन के साथ जोड़ कर देखा है, लेकिन उसकी सापेक्ष स्वायत्तता की सीमा का अतिक्रमण कर वे अधिक सपाट बन गये हैं। नयी कविता के अधिकांश कवि दुःख, निराशा, हताशा, संत्रास आदि मनोदशाओं को शाश्वत और अपरिहार्य मानकर चले हैं। अपनी इस प्रवृत्ति को उन्होंने कला की पूर्ण स्वायत्तता और सौंदर्यानुभूति तथा जीवनानुभूति की विलगता के सिद्धांत द्वारा ढंकने की कोशिश की है। लेकिन मुक्तिबोध ने इन्हें यथार्थ और वास्तविक मानते हुए भी इनका निदान या समाधान प्रस्तुत करते हुए एक आशावादी परिप्रेक्ष्य अपनाया है। इसलिए वे अस्तित्ववाद की सीमाओं का अतिक्रमण करते हुए एक प्रगतिकामी कलाकार की भूमिका अदा करते हैं।

मुक्तिबोध ने रचना प्रक्रिया पर 'एक साहित्यिक की डायरी', 'नयी कविता का आत्म संघर्ष' तथा अन्य निबंध,' 'नये साहित्य का सौंदर्यशास्त्र' और 'कामायनी : एक पुनर्विचार' शीर्षक अपने चारों आरंभिक ग्रंथों में विस्तार से विचार किया है। उपर्युक्त तीन रचनाओं में रचना-प्रक्रिया पर स्वतंत्र लेख के साथ ही अन्य समीक्षात्मक लेखों में भी रचना प्रक्रिया के महत्व को

Scanned with CamScanner

रेखांकित किया गया है। 'एक साहित्यिक की डायरी' में 'तीसरा क्षण' में वस्तुतः मुक्तिबोध ने अपनी रचना प्रक्रिया को ही अधिक रेखांकित किया है। इसमें कला के तीन क्षणों की चर्चा करते हुए मुक्तिबोध ने लिखा है -

कला का पहला क्षण है- 'जीवन का उत्कट-तीव्र अनुभव।'

दूसरा क्षण है- 'इस अनुभव को अपने दुखते-कसकते मूलों से अलग हो जाना और एक फैंटेसी का रूप धारण कर लेना मानो वह फैंटेसी अपनी आँखों के सामने खड़ी है।'

तीसरा और अंतिम क्षण- 'इस फैंटेसी के शब्दबद्ध होने की प्रक्रिया का आरंभ और उस प्रक्रिया की परिपूर्णावस्था की गतिमानता।' शब्दबद्ध होने की प्रक्रिया के भीतर जो प्रवाह बहता रहता है वह समस्त व्यक्तित्व और जीवन का प्रवाह होता है। प्रवाह में वह फैंटेसी अनवरत रूप से विकसित परिवर्तित होती हुई आगे बढ़ती जाती है। इस प्रकार वह फैंटेसी ~~अनवरत रूप से विकसित परिवर्तित होती हुई आगे बढ़ती जाती है।~~ अपने मूल रूप को बहुत कुछ त्यागती हुई नवीन रूप धारण कर लेती है।'

रचना प्रक्रिया की उपर्युक्त मान्यता मुक्तिबोध की अपनी रचना प्रक्रिया को भी उद्घाटित करती है क्योंकि उन्होंने फैंटेसी को अपने लिए एक विशेष शिल्प के रूप में स्वीकार किया है।

Scanned with CamScanner